पैरा-सोशल इंटरैक्शन' (दर्शकों का किरदारों के साथ रिश्ता) से आप क्या समझते है?

'पैरा-सोशल इंटरैक्शन' (Para-social Interaction - PSI) मीडिया स्टडीज का एक बहुत ही दिलचस्प कॉन्सेप्ट है, जो ओटीटी (OTT) के दौर में और भी ज्यादा गहरा हो गया है।

सरल शब्दों में, जब एक दर्शक किसी पर्दे के किरदार (या सेलिब्रिटी) के साथ ऐसा महसूस करने लगता है जैसे वह उसका 'सच्चा दोस्त' या करीबी है, तो उसे पैरा-सोशल इंटरैक्शन कहते हैं। जबकि हकीकत में यह रिश्ता 'एकतरफा' (One-sided) होता है—किरदार आपको नहीं जानता, लेकिन आप उसके बारे में सब कुछ जानते हैं।

ओटीटी ने इस रिश्ते को कैसे बदला है? आइए विस्तार से समझते हैं:

1. 'दोस्ती' का अहसास (Illusion of Intimacy)

ओटीटी पर लंबी चलने वाली सीरीज (जैसे 5-6 सीजन्स) में दर्शक किरदारों के साथ घंटों बिताते हैं।

* जब आप किसी किरदार को सालों तक उसके सुख-दुख, संघर्ष और विकास के साथ देखते हैं, तो आपके दिमाग में उसके प्रति एक भावनात्मक जुड़ाव विकसित हो जाता है।

* दर्शक अक्सर सोचने लगते हैं, "अगर मैं उसकी जगह होता तो क्या करता?" या "वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त होता।"

2. बिंज-वॉचिंग और जुड़ाव की तीव्रता

पारंपरिक टीवी पर आप एक एपिसोड के बाद हफ्ते भर का इंतजार करते थे। लेकिन ओटीटी पर आप एक ही दिन में 10 घंटे उस किरदार के साथ बिता सकते हैं।

* यह 'लगातार संपर्क' उस किरदार को आपके वास्तविक जीवन के दोस्तों से भी ज्यादा 'उपलब्ध' बना देता है।

* ग्रेटिफिकेशन: यह उन लोगों के लिए सामाजिक संतुष्टि (Social Gratification) का काम करता है जो खुद को अकेला महसूस करते हैं।

3. सोशल मीडिया का तड़का (Breaking the Fourth Wall)

आजकल ओटीटी के एक्टर्स इंस्टाग्राम और ट्विटर पर अपने किरदारों के पीछे की बातें शेयर करते हैं।

* जब कोई एक्टर "बिहाइंड द सीन्स" वीडियो डालता है, तो दर्शक को लगता है कि वह उस दुनिया का हिस्सा है।

* कमेंट्स का रिप्लाई मिलना या लाइव सेशन देखना इस 'पैरा-सोशल' रिश्ते को और भी असली बना देता है।

4. किरदारों की मृत्यु या शो का अंत (Grief and Loss)

क्या आपने कभी किसी पसंदीदा शो के खत्म होने पर या किसी किरदार के मरने पर 'शोक' महसूस किया है?

* यह पैरा-सोशल इंटरैक्शन का सबसे बड़ा सबूत है। शोध बताते हैं कि पसंदीदा किरदार के जाने का दुख वैसा ही हो सकता है जैसा किसी वास्तविक दोस्त के बिछड़ने पर होता है।

5. विज्ञापन और प्रभाव (Influence)

ब्रांड्स इसी पैरा-सोशल रिश्ते का फायदा उठाते हैं। जब आपका 'पसंदीदा किरदार' किसी चीज का प्रचार करता है, तो आप उस पर भरोसा करते हैं क्योंकि आप उसे अपना दोस्त मानते हैं।

पैरा-सोशल इंटरैक्शन के प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव	चिंता का विषय
अकेलेपन में कमी: यह लोगों को भावनात्मक सहारा देता है।	वास्तविकता से दूरी: लोग असली रिश्तों की जगह इन काल्पनिक रिश्तों को प्राथमिकता देने लगते हैं।
प्रेरणा: किरदारों के संघर्ष से लोग साहस पाते हैं।	मानसिक तनाव: शो खत्म होने पर 'Post-series depression' जैसी स्थिति होना।
विविधता की समझ: अलग-अलग संस्कृतियों के किरदारों को अपना मानकर उनके प्रति सहानुभूति बढ़ती है।	गलत उम्मीदें: लोग वास्तविक जीवन के लोगों से भी उन्हीं 'परफेक्ट' किरदारों जैसी उम्मीद करने लगते हैं।

निष्कर्ष:
ओटीटी प्लेटफॉर्म्स अब सिर्फ 'कंटेंट' नहीं बेच रहे, वे 'रिश्ते' बेच रहे हैं। 'यूजेस एंड ग्रेटिफिकेशन' थ्योरी के अनुसार, हम ओटीटी इसलिए देखते हैं क्योंकि हमें इन किरदारों से वह ' companionship' (साथ) मिलता है जो शायद हमारी व्यस्त और एकाकी (Lonely) जीवनशैली में कम हो गया है।